Lecture No (02)

I Name of the College - A.P.S.M College, Barauni, Begusarai
L.N.M.U Darbhanga.

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)

Deptt - A.I.H. &C

Lesson/ plan for class B.A Part II (H) Paper IV

Date - 21-06-21

Name of the Topic - रामेश्वरम् मंदिर

दक्षिण भारत में सेतुबंध रामेश्वर नामक स्थान पूर्वी समुद्र किनारे स्थित है, जहाँ से भगवान रामचंद्र ने लंका की विजययात्रा संपन्न की। वह एक छोटा सा द्वीप है, जो छिछले समुद्र द्वारा भारत से पृथक् किया गया और पवन पुल द्वारा भारत से पृथक् किया गया और पुल द्वारा भारत से वहाँ पहुँचते हैं। द्रविड़ शैली का दूसरा विख्यात मंदिर रामेश्वरम का है, जिसे नायक शासनकाल में बनाया गया था। तंजौर या मदुरै मंदिरों के सदृश इस मंदिर की सुव्यवस्थित योजना समझ में नहीं आती। तंजौर का मंदिर रामेश्वरम् का आधा ही है, तथापि उनमें स्थापत्य सत्ता सम्मिलित रूप से प्रकट होती है। मीनाक्षी मंदिर की तरह रामेश्वरम् मंदिर में देवालय है, जो एक के भीतर एक तीन दीवारों से घिरे हैं। सबसे बाहरी दीवार 880 फुट चौड़ी तथा 20 फीट ऊँची है। इसमें सत्रहवीं सदी के चार सुंदर गोपुरम् हैं। मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण, वैभवपूर्ण एवं भव्य (के) चार हजार फुट का स्तंभों वाला गलियारा है, जो मंदिर को घेरे हुए है। गलियारों की चौड़ाई 17 से 21 फुट तक मानी गई है। उसकी ऊँचाई 25 फुट है। स्तंभों को प्रचुरमात्रा में अलंकृत किया P.T.O.

Scanned with CamScanner

(2)

गया है। के अच्छे अनुपात में बने हुए हैं। तथा सुव्यवस्थित रूप में कुशलतापूर्वक गलियों में स्थित किए गए हैं। गलियारा की 5 फुट ऊँचाई से आरम्भ कर 12 फुट ~~ऊँचाई~~ 40523 ~~ऊँचाई~~ लम्बाई में उनको गढ़ कर तैयार किया गया है। यदि एक कोने में खड़े होकर देखें और सापेक्ष महत्व पर विचार किया जाय, तो एक पंक्ति में अनगिनत मालूम पड़ते हैं। लगभग चार सौ फुट लंबी रचनात्मक दर्शक को चकित कर देती है। बाहरी दिशा में मंदिर सादी दीवार से ही घिरा मालूम पड़ता है। उसमें पूर्वी दिशा में एक गोपुरम बनाया गया है। दूसरे परकोटे के प्रमुख द्वार पर भव्य गोपुरम है; जो ग्यारह मंजिल का बना है और जिसकी ऊँचाई 150 फुट है। बाहरी दीवार भी ही घिरा मालूम पड़ता है। लगभग दक्षिण दिशाओं में विशाल गोपुरम बनाए जा रहे थे, किन्तु उनके निचले भाग बन कर ही छोड़ दिए गए यानी वो असमाप्त है।

दक्षिण आरकट जिले में स्थित चिदंबरम में नटराज मंदिर अपनी स्थापत्यकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस मंदिर में कई इमारतें हैं, जिनका भिन्न निर्माण अलग-अलग युग में हुआ था, यद्यपि पूर्वी गोपुरम, तेरहवीं सदी, पार्वती मंदिर चौदहवीं सदी तथा उत्तरी गोपुरम 16वीं सदी में निर्मित हुए थे, परन्तु, उनकी रचनाओं में अद्भुत तारतम्य एवं एकता है। सहस्र स्तंभों वाला सभामंडप (राजसभा) के लिए यह मंदिर विख्यात है। इस मंदिर-निर्माण के पीछे एक कथानक प्रसिद्ध है कि दसवीं सदी के चोलराज परांतक ने भगवान शिव का शिवदर्शन किया, जो पार्वती-सहित डमरू लेकर नृत्य कर रहे थे। राजा ने शीघ्र ही कनक सभा बना कर उनकी स्मृति में मंदिर-निर्माण किया। मुख्य गर्भगृह में नटेश की प्रतिमा स्थापित है। मुख्य देवालय से पृथक कई इमारतें बनी हैं। इन मंदिर में P.T.O.

ग्रेनाइड प्रस्तर के छप्पन स्तंभ जुड़े हैं। जिनकी ऊँचाई आठ फुट है। सभी स्तंभ अतीव सुंदर रीति से खुदे हैं। जिस शाला पर स्तंभ खड़े हैं, वह सभी अलंकृत है। वहाँ नाना मुद्रा में नृत्य करती नर्तकियों की आकृतियाँ उकेरी गई हैं।

चिदंबरम के गोपुरम में भित्तियों पर नाट्यशास्त्र के तांडव लक्षण प्रकरण के 108 करण (हाथ एवं पैर का विन्यास) एक दूसरे के ऊपर क्रमशः बनाए गए हैं। इनकी खुदाई शिलापट्टों पर की गई है, नर्तकी के साथ ही एक ओर वादक तथा दूसरी ओर ताल देने वाली आकृतियाँ बनी हैं। पूर्वी तथा पश्चिमी गोपुरम पर नृत्यों को बोधगम्य करने के लिए नाट्यशास्त्र के आनुपातिक श्लोकों को भी उत्कीर्ण किया गया है। दक्षिण भारत के तिरु. तिरुनेवेल्ली मंदिर भी गोपुरम, तालाब तथा मंडप (तीनों प्रकार) से युक्त है। बाहरी परकोटे में चार गोपुरम हैं, तथा दूसरे अहाते में संबंधित अन्य गोपुरम बने हैं। आयताकार क्षेत्रफल (580 X 456 फुट) से मंदिर विस्तृत है।

भारती कुमारी
A.I.H. & C
Date - 21-06-21